



Total No. of Printed Pages – 4

APPM
KHARIYA LANGUAGE AND LITERATURE

खड़िया भाषा और साहित्य

SUBJECT CODE : 11

विषय कोड : 11

PAPER – IX

पत्र – IX

Full Marks : 100

पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours

समय : 3 घण्टे

Marks

अंक

खण्ड-I

भाग-(क)

1. जहाय उ' फे जुनुड या' उतारा तेरेपे :

3 × 10 = 30

- (i) खड़िया लाड या उद्भव रो विकास इधय होयकी अपन विचार उतुनेपे ?
- (ii) खड़िया लाड या' ई विभेषता अयि'ज बारुबो' उतुनेपे ?
- (iii) खड़िया व्यकरण ते सर्वनाम या' परिभाषा तेरकोन उकड़ा भे ते उतुनेपे ?
- (iv) संज्ञा या' परिभाषा तेरकोन उकड़ा' भेद सोरो उदाहरण तेरकोन पुसुडेपे ?
- (v) खड़िया साहित्य या' विकास ते देवनागरी लिपि ई योगदान अयि'ज् अपन विचार उतुनेपे ?

APPM

Paper-IX



भाग-(ख)

2. जहारा मोलोय जुनुड या' उतारा तेरेपे

30

- (i) खड़िया लोक साहित्य ईते गामतेमय ? उकड़ कि'ते भाना ते अयि'ज विस्तार बो' उतुनेपे ?
- (ii) बाईर आलोड खड़िया जीवन दर्शन कुईता इघय ? आलोड सोरी उतुनेपे ?
- (iii) खड़िया लोककथा ई ते गामतेमय ? गोत्रकथा सोरी उतुनेपे ?
- (iv) खड़िया भाषा प्रकीर्ण साहित्य कि'ते भाग ते अयि'ज ? जहाय उबर या' परिभाषा तेरकोन उदाहरण सोरी बारुबो' उतारा तेरेपे ?
- (v) खड़िया भिष्ट साहित्य या' विकास ते ख्रीस्त प्यारा केरके ट्टा ई योगदान अयि'ज ? उदाहरण सोरी उतारा तेरेपे ?
- (vi) खड़िया गद्य साहित्य या' विकास ते विदेशी लेखक कि'या' ई योगदान अयि'ज ? उदाहरण सोरी उतारा तेरेपे ?
- (vii) खड़िया उपन्यास साहित्य या' बारे संक्षेप बुड़ उतुनेपे ?

भाग-(ग)

3. डोबड़ेगेपे :

10

मोज पोखरा आवकी । पोखरा ते मोज कुल्लू आवना ला'की' । दियोगा उबर हंसा उ पोखरा ते काडोड जो'ना । उवा'ना डेना ला'की कियर । उकीया' मो'झी ते इकु'ड दुलार आवकी । मेया'ना नो तीनों झनगा जुमेना ला'कीमय । जावडि'ब सोरीगा अवना ला'कीमय ।

कायोम कथाना ला'कीमय । बेड़ो डुबेना' सेडगा उकी अपन-अपन ओ' चोल कानना ला'कीमय । दियो या' उगा धतम आवकी । गिड़िड दिनु डेलकी' पोखर या' डा' आजो'इना माड़ेयो' । हंसाकियर ते फिकिर डे'बना माड़ेयो' नो बेचरंगा कुल्लू इघय बोरोल आवना । उकड़ते कोसोर ताय बनचायना' थोड़ उपाय सोचायना माड़ेयो' कियर' उ'फे झन सोरी डोकोकोन विचारतेमय नो कोसोर या' बिपइत मुडु या' उम्बो' झाड़ी' या'गा हेके' ।



खण्ड-II

4. खड़ियालाडबुड़ उलथा' येपे :

10

खड़िया जनजाति की पारम्परिक कानून व्यवस्था प्राचीन काल से ही चली आ रही है। यह सामाजिक पारम्परिक कानून व्यवस्था पीढ़ी दर पीढ़ी से चलती आ रही है। इसी पारम्परिक कानून व्यवस्था से खड़िया समाज लम्बे समय से चलता आ रहा है। इसी पारम्परिक कानून व्यवस्था से खड़िया समुदाय के लोग किसी भी बात के लिए साथ बैठकर ही सर्वसम्मति से निर्णय लेते हैं। खड़िया समाज के किसी बुद्धिजीवी वर्ग के लोग बैठक से सही न्याय करते हैं। सामाजिक बैठक में किसी मामले के निर्णय लेने में पुरुष की अहम भूमिका होती है। खड़िया समाज के सभी बुद्धिजीवी एक साथ बैठकर विचार-विमर्श करते हैं। इन्हें खड़िया भाषा में 'डोकलो' कहा जाता है। खड़िया 'डोकलो' दो शब्दों के मेल से बना है।

डोको + आलो' के मेल से 'डोकलो' शब्द बना है।

5. पोढ़ेकोन जुनुड़ उ'फे मा' उतारा तेरेपे :

10

अले सेरे सिपाही बही पटा योना तेरे

बही ते गिनिड़ लिखा आयी'जू रे

हे अपा तेलंगा पो'दाते डेनाम

दुराते सिपाही डोकोसी' रे

अलेसे रे पा'जको सिंकोय सुला'ते

गोला ओरेज' गिनिड़ तेरिज रे

हे अपा तेलंगा पो'दाते डेनाम

दुराते सिपाही डोकोसी' रे

(i) ईना बहि पटा योना लामतेयि'जू ?

(ii) सिपाही दुरा ते ईना डोकोसि' ?

(iii) तेलंगा ते ईना रेमा' डोमतायि'जू ?



6. उजे' मेले योयेपे :

5

(क) कोडीया' धोती समय भेइरगा'

हुम्पेर-हुम्पेर कटा डारना

(ख) बु' झीनायेपे :

5

(i) गाय घालते जाड, जाड घालते बाझरु । ई हे के ?

(ii) ठुपु बुढा बिलुङ बोरते । ई हे ?

(iii) मोज बीरु ते प्नेम गेइंठ या' कोन्डेड । ई हे ?

(iv) मोज कडांयबो' या' मि'तर ते कोमांड बहेर ते पंजरी बो'कोण ते चुन्दी । ई हे ?

(v) मुगाम ते रुसुङ टोपी कुडा'ब ते सौ लेबु । ई हे ?
